सूरह — एक कहानी

सूरह अर-र'अद

गरज

पूरा सफ़र — वो दिल जो क़रार पाते हैं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 13 • 43 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्लाहुल्-लज़ी रफ़'अस्-समावाति बि-ग़ैरि 'अमदिन तरौनहा
2. अल्लाह वही है जिसने आसमानों को बिना ऐसे सुतून के बुलंद किया जिन्हें तुम देखो।

युस्क़ा बि-मा-इंव्-वाहिदिंव्-व नुफ़ज़्ज़िलु ब'अ्ज़हा 'अला ब'अ्ज़िन फ़िल्-उकुल
4. एक ही पानी से सींचे जाते हैं, और हम उन्हें ज़ायक़े में एक दूसरे पर फ़ौक़ियत देते हैं।

इन्नल्-लाह ला युग़य्यिरु मा बि-क़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बि-अन्फ़ुसिहिम
11. बेशक अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वो अपने अंदर की चीज़ न बदलें।

व युसब्बिहुर्-र'अदु बि-हम्दिही वल्-मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिह
13. और गरज उसकी हम्द के साथ तस्बीह करती है, और फ़रिश्ते उसके ख़ौफ़ से।

अला बि-ज़िक्रिल्-लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब
28. ख़ूब सुनो, अल्लाह की याद से ही दिलों को क़रार मिलता है।

यम्हुल्-लाहु मा यशा-उ व युस्बितु व 'इन्दहू उम्मुल्-किताब
39. अल्लाह जो चाहे मिटाता है और जो चाहे क़ायम रखता है, और उसी के पास उम्मुल-किताब है।

बिना सुतून के बुलंद

बेटा, ये सूरह आपकी नज़रें ऊपर की तरफ़ मोड़ कर खुलती है:

'**अल्लाहुल्-लज़ी रफ़'अस्-समावाति बि-ग़ैरि 'अमदिन तरौनहा** — **अल्लाह वही है जिसने आसमानों को बिना ऐसे सुतून के बुलंद किया जिन्हें तुम देखो** — **सुम्मस्-तवा 'अलल्-'अर्श** — फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुआ — **व सख़्ख़रश्-शम्स वल्-क़मर कुल्लुंय्यज्री लि-अजलिम्-मुसम्मा** — और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, **हर एक एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए चल रहा है** — **युदब्बिरुल्-अम्र** — **वो मामले का इंतेज़ाम करता है।**'

बेटा, 'बि-ग़ैरि 'अमदिन तरौनहा' — बिना ऐसे सुतून के **जिन्हें तुम देखो**। आसमान

की तरफ़ देखिए। **ये किसी चीज़ पर टिका हुआ नहीं। कोई चीज़ इसे थामे नहीं, और ये गिरता नहीं।**

'**व हुवल्-लज़ी मद्दल्-अर्ज़ व ज'अल फ़ीहा रवासिय व अन्हारा** — और वही है जिसने ज़मीन फैलाई और उस में मज़बूत पहाड़ और नहरें रखीं — **व मिन कुल्लिस्-समराति ज'अल फ़ीहा ज़ौजैनिस्-नैन** — और हर फल में से उस में **जोड़े, दो दो** बनाए — **युग़्शिल्-लैलन्-नहार** — वो रात से दिन को ढाँप देता है।'

और फिर, बेटा, एक आयत जो एक ऐसी चीज़ पर ग़ौर करती है जो इतनी मामूली है कि हम रोज़ उसके पास से गुज़र जाते हैं — और ये लोगों के बारे में एक सबक़ है:

'**व फ़िल्-अर्ज़िं क़ित'अुम्-मुतजाविरात** — **और ज़मीन में आस-पास के टुकड़े हैं** — **व जन्नातुम्-मिन अअ्नाबिंव्-व ज़र्'उंव्-व नख़ीलुन सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिन** — और अंगूर के बाग़ और खेतियाँ और खजूर के दरख़्त, कुछ एक ही जड़ से उगते और कुछ नहीं — **युस्क़ा बि-मा-इंव्-वाहिदिन** — **एक ही पानी से सींचे जाते हैं** — **व नुफ़ज़्ज़िलु ब'अ्ज़हा 'अला ब'अ्ज़िन फ़िल्-उकुल** — **मगर हम उन में से बाज़ को बाज़ पर ज़ायक़े में फ़ौक़ियत देते हैं** — **इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयातिल्-लि-क़ौमिंय्यअ्क़िलून** — बेशक, उस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।'

बेटा, इस के साथ बैठिए। दो ज़मीन के टुकड़े एक दूसरे के बग़ल में। वही मिट्टी, वही सूरज, वही बारिश — **एक ही पानी।** और उन से जो उगता है वो बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है: एक मीठा, एक खट्टा, एक भरपूर, एक कमज़ोर।

बेटा, उलमा ने इसे लोगों पर लगाया। एक ही घर में दो भाई। एक ही उस्ताद के दो शागिर्द। दो लोग जो वही एक ख़ुत्बा सुनते हैं, वही एक आयत पढ़ते हैं, वही परवरिश पाते हैं। **एक ही पानी — बिल्कुल मुख़्तलिफ़ फल।**

क्योंकि **फ़र्क़ कभी पानी में न था। वो उस ज़मीन में था जो उसे क़ुबूल कर रही थी।**

बेटा, तो इस से पहले कि आप शिकायत करें कि एक नसीहत आपको फ़ायदा न दे सकी, **अपनी मिट्टी के बारे में पूछिए।**

जब तक वो ख़ुद को न बदलें

फिर सूरह एक अहम बयान देती है कि अल्लाह क्या जानते हैं: '**अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दाद** — अल्लाह जानता है जो हर मादा उठाती है, और जो रहम कम करते हैं और जो बढ़ाते हैं — **व कुल्लु शै-इन 'इन्दहू बि-मिक़्दार — और हर चीज़ उस के पास एक मुक़र्रर अंदाज़े से है।**'

'**सवा-उम्-मिन्कुम मन असर्रल्-क़ौल व मन जहर बिही व मन हुव मुस्तख़्फ़िम्-बिल्-लैलि व सारिबुम्-बिन्-नहार** — (उसके लिए) **बराबर** है कि तुम में से कोई अपनी बात छुपाए या उसे ज़ाहिर करे, और कोई **रात में छुपे या दिन में खुले-आम चले।**'

बेटा, **फुसफुसाया हुआ लफ़्ज़ और चीख़ा हुआ लफ़्ज़ बराबर पहुँचते हैं। रात और दिन की रौशनी उन के लिए एक जैसी है।**

'**लहू मु'अक़्क़िबातुम्-मिम्-बैनि यदैहि व मिन ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन अम्रिल्-लाह — उस के लिए फ़रिश्ते पय-दर-पय हैं, आगे और पीछे, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।**'

बेटा, 'मु'अक़्क़िबात' — वो जो बारी बारी एक दूसरे के बाद आते हैं। तुमपर मुक़र्रर फ़रिश्ते, बारी बदलते हुए, आगे और पीछे। बेटा, **तुम अपनी ज़िंदगी के एक लम्हे के लिए भी बे-हिफ़ाज़त नहीं रहे।**

और फिर, बेटा, क़ुरआन की सब से ज़्यादा नक़्ल की जाने वाली आयतों में से एक — और सब से ज़्यादा ग़लत इस्तेमाल होने वाली:

'**इन्नल्-लाह ला युग़य्यिरु मा बि-क़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बि-अन्फ़ुसिहिम — बेशक, अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वो वो न बदलें जो उनके अपने अंदर है।**'

बेटा, अल्फ़ाज़ को ठीक ठीक देखिए, क्योंकि यहीं लोग इसे ग़लत पढ़ते हैं। ये ये नहीं कहता 'जब तक वो अपने हालात न बदलें'। ये कहता है '**मा बि-अन्फ़ुसिहिम**' — **जो उनके अपने अंदर है।**

तो जिस तबदीली का अल्लाह इंतेज़ार करते हैं वो **अंदरूनी** है: जो दिलों में है, नियतों में, किरदार में, ईमानदारी में, ज़ब्त में, एक क़ौम की इख़्लास में।

बेटा, इसी लिए बाहरी हल नाकाम होते रहते हैं। **एक कम्युनिटी अपने लीडर बदल सकती है, अपने निज़ाम, अपने नारे, अपनी फ़ंडिंग — और अगर लोगों के अंदर जो है वो नहीं बदला, तो वही नतीजा एक नई शक्ल में फिर ज़ाहिर हो जाता है।**

और बेटा, इसे ज़ाती तौर पर भी लगाइए। आप चाहते हैं कि आपकी सूरत-ए-हाल बदले। **ये आयत आपको बताती है कि लीवर कहाँ है: वहाँ बाहर नहीं। यहाँ अंदर।**

और ग़ौर कीजिए कि उसका उल्टा भी इस में शामिल है और वो और भी होश में लाने वाला है: **एक क़ौम जो अच्छी हालत में हो वो उसे तब तक नहीं खोती जब तक उन के अंदर कुछ पहले न बदल जाए।** नेमतें आम तौर पर अचानक नहीं जातीं; नुक़सान ज़ाहिर होने से पहले कहीं कुछ ख़ामोशी से सड़ चुका होता है।

'**व इज़ा अरादल्-लाहु बि-क़ौमिन सू-अन फ़-ला मरद्द लह** — और जब अल्लाह किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करते हैं तो उसे कोई लौटा नहीं सकता — **व मा लहुम मिन दूनिही मिंव्-वाल** — और उनके लिए उसके सिवा कोई कारसाज़ नहीं।'

गरज उसकी तस्बीह करती है

और अब, बेटा, वो आयत जो इस सूरह को उसका नाम देती है:

'**हुवल्-लज़ी युरीकुमुल्-बर्क़ ख़ौफ़ंव्-व तम'आ — वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है, ख़ौफ़ और उम्मीद पैदा करते हुए — व युन्शिउस्-सहाबस्-सिक़ाल — और भारी बादल बनाता है।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'ख़ौफ़ंव्-व तम'आ' — वही एक कौंधा **ख़ौफ़** पैदा करता है (तूफ़ान का, सैलाब का, गिरने का) और **उम्मीद** (बारिश की, फ़सलों की, राहत की)। एक वाक़िआ, दो जज़्बे — **और ठीक यूँ ही एक मोमिन अपनी ज़िंदगी को थामता है।**

'**व युसब्बिहुर्-र'अदु बि-हम्दिही वल्-मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिह — और गरज उसकी हम्द के साथ तस्बीह करती है — और फ़रिश्ते भी, उसके ख़ौफ़ से — व युर्सिलुस्-सवा'इक़ फ़-युसीबु बिहा मंय्यशा-उ व हुम युजादिलून फ़िल्लाह** — और वो बिजलियाँ भेजता है और उनसे जिसे चाहे पहुँचाता है — **जब कि वो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं — व हुव शदीदुल्-मिहाल** — और वो सख़्त पकड़ वाला है।'

बेटा, तस्वीर महसूस कीजिए। उन के ऊपर का आसमान अल्लाह की तस्बीह कर रहा है — गरज ख़ुद तस्बीह है — और फ़रिश्ते ख़ौफ़ से काँप रहे हैं। और नीचे, छोटे से इंसान खड़े हो कर **बहस** कर रहे हैं कि वो हैं भी या नहीं।

बेटा, यही वो तज़ाद है जो आयत खींचती है। **तख़्लीक़ इबादत कर रही है; इंसान बहस कर रहा है।**

और रिवायत है कि नबी ﷺ जब गरज सुनते तो कहते: '**सुब्हानल्-लज़ी युसब्बिहुर्-र'अदु बि-हम्दिही वल्-मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिह**।' बेटा, इसे सीख लीजिए और अगली बार गरज सुन कर कहिए — मौसम की शिकायत करने के बजाए।

'**लहू द'अ्वतुल्-हक़्क़ — उसी के लिए हक़ की पुकार है — वल्-लज़ीन यद्'ऊन मिन दूनिही ला यस्तजीबून लहुम बि-शै-इन इल्ला क-बासिति कफ़्फ़ैहि इलल्-मा-इ लि-यब्लुग़ फ़ाहु व मा हुव बि-बालिग़िह** — और जिन्हें वो उसके सिवा पुकारते हैं वो उन्हें किसी चीज़ का जवाब नहीं देते, **सिवाए उस शख़्स की तरह जो अपनी हथेलियाँ पानी की तरफ़ फैलाए, इस उम्मीद पर कि वो उसके मुँह तक पहुँच जाए — मगर वो कभी उस तक न पहुँचेगा।**'

बेटा, बे-कारी की क्या तस्वीर है। **एक प्यासा आदमी कुएँ के किनारे घुटनों के बल, खुले हाथ उस पानी की तरफ़ बढ़ाए जिसे वो छू नहीं सकता — और पानी कभी ऊपर नहीं आता।** यही हर वो दुआ है जो अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ की जाए।

सैलाब और झाग

और अब, बेटा, क़ुरआन की सब से ज़ोर-दार मिसालों में से एक — और ये हक़ और बातिल की पूरी तारीख़ समझाती है।

'**अन्ज़ल मिनस्-समा-इ मा-अन फ़-सालत औदियतुम्-बि-क़दरिहा** — वो आसमान से पानी उतारता है, तो **वादियाँ अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ बहती हैं** — **फ़ह्तमलस्-सैलु ज़बदर्-राबिया** — **और सैलाब एक उभरा हुआ झाग उठा लेता है।**'

बेटा, पहला हिस्सा ग़ौर कीजिए: हर वादी 'बि-क़दरिहा' — **अपनी गुंजाइश के मुताबिक़** लेती है। वही बारिश उन सब पर पड़ती है; एक चौड़ी वादी एक दरिया उठाती है, एक छोटी एक नाला। बेटा, **इल्म और हिदायत भी यूँ ही है: वही एक क़ुरआन सब को पढ़ा जाता है, और हर शख़्स उतना ले जाता है जितना उसका बर्तन थाम सके।**

'**व मिम्मा यूक़िदून 'अलैहि फ़िन्-नारिब्-तिग़ा-अ हिल्यतिन औ मता'इन ज़बदुम्-मिस्लुह** — और उस में से जिसे वो आग में तपाते हैं, ज़ेवर या बर्तन बनाने के लिए, एक **वैसा ही झाग (मैल)** उठता है।'

बेटा, दूसरी तस्वीर: धातु पिघलाई जा रही है ज़ेवर या आलात बनाने के लिए, और मैल ऊपर तैर कर आ जाता है।

'**कज़ालिक यज़्रिबुल्-लाहुल्-हक़्क़ वल्-बातिल** — **यूँ अल्लाह हक़ और बातिल की मिसाल देते हैं।**'

'**फ़-अम्मज़्-ज़बदु फ़-यज़्हबु जुफ़ा** — **तो जो झाग है वो चला जाता है, फेंक दिया जाता है** — **व अम्मा मा यन्फ़'उन्-नास फ़-यम्कुसु फ़िल्-अर्ज़** — **मगर जो लोगों को फ़ायदा देता है वो ज़मीन में ठहर जाता है** — **कज़ालिक यज़्रिबुल्-लाहुल्-अम्साल** — यूँ अल्लाह मिसालें देते हैं।'

बेटा, इसे खोल कर देखिए, क्योंकि ये उस दौर का बयान है जिस में आप जी रहे हैं।

एक सैलाब देखिए। **झाग ऊपर बैठता है।** वो सफ़ेद है, वो रौशनी पकड़ता है, वो पहली चीज़ है जिसपर आपकी नज़र पड़ती है, और वो सब से ज़्यादा शोर करता है। **पानी — वो चीज़ जिसकी अस्ल में सब को ज़रूरत है — नीचे है, ख़ामोश, कुछ ड्रामाई किए बग़ैर।**

और फिर सैलाब गुज़र जाता है। और झाग? 'जुफ़ा-अन' — एक तरफ़ फेंक दिया,

किनारों पर सूख गया, ख़त्म। और पानी ज़मीन में उतर चुका, जहाँ वो बरसों फ़सलों को खिलाएगा।

बेटा, यही बातिल और हक़ बिल्कुल ठीक है। **बातिल ऊँची आवाज़ वाला, नज़र आने वाला, और हमेशा सतह पर होता है।** वो ट्रेंड करता है। वो तवज्जोह पाता है। वो अस्ल वाक़िआ लगता है।

और **हक़ अक्सर ख़ामोश होता है, और लगता है कि वो हार रहा है — ठीक उस वक़्त तक जब सैलाब गुज़र जाए।**

बेटा, तो हक़ को शोर से मत नापो, और मायूस मत हो जब कोई झूठ हर तरफ़ हो और कोई सही चीज़ मुश्किल से नज़र आए। किसी भी चीज़ के बारे में एक सवाल पूछो: '**मा यन्फ़'उन्-नास**' — **क्या ये लोगों को फ़ायदा देती है?** जो भी लोगों को फ़ायदा दे वो ठहर जाता है। बाक़ी सब झाग है जो सूखने का इंतेज़ार कर रहा है।

वो दिल जो क़रार पाते हैं

फिर सूरह उन लोगों का बयान करती है जो समझते हैं — '**उलुल्-अल्बाब**' — और उनकी सिफ़ात गिनाती है, बेटा: वो अल्लाह का अह्द पूरा करते हैं और उसे तोड़ते नहीं; वो उस को जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया; वो अपने रब से डरते हैं और बुरे हिसाब से डरते हैं; वो अपने रब का चेहरा चाहते हुए सब्र करते हैं; वो नमाज़ क़ायम करते हैं; वो उस में से जो उसने दिया छुप कर और खुले-आम ख़र्च करते हैं; और '**यद्रऊन बिल्-हसनतिस्-सय्यि-अह — वो बुराई को भलाई से हटाते हैं।**'

बेटा, उस एक को ख़ास तौर पर ग़ौर कीजिए: **वो बुरे सुलूक का जवाब अच्छे सुलूक से देते हैं।** सिर्फ़ बदला लेने से रुक जाना नहीं — बल्कि अमली तौर पर भलाई से जवाब देना।

और उन के बारे में अल्लाह कहते हैं: '**उलाइक लहुम 'उक़्बद्-दार** — उन के लिए आख़िरी घर है — **जन्नातु 'अद्निंय्यद्ख़ुलूनहा व मन सलह मिन आबाइहिम व अज़्वाजिहिम व ज़ुर्रिय्यातिहिम** — हमेशगी के बाग़, जिन में वो दाख़िल होंगे **उन के**

साथ जो उनके बाप-दादा, उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से नेक थे — वल्-मलाइकतु यद्ख़ुलून 'अलैहिम मिन कुल्लि बाब — और फ़रिश्ते उन पर हर दरवाज़े से दाख़िल होंगे — **सलामुन 'अलैकुम बिमा सबर्तुम — तुम पर सलाम हो उस के बदले जो तुमने सब्र से झेला।**'

बेटा, वहाँ वादा की गई मुलाक़ात देखिए: **आपके माँ-बाप के नेक, आपकी बीवी, आपके बच्चे — सब साथ।** बेटा, ये इस लायक़ है कि उस के लिए मेहनत की जाए, और उन के लिए दुआ की जाए।

और फिर, बेटा, वो आयत जो ठीक इस सूरह के मरकज़ में है — और पूरे क़ुरआन की सब से शिफ़ा देने वाली आयतों में से एक:

'**अल्लज़ीन आमनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम बि-ज़िक्रिल्-लाह — वो जो ईमान लाए और जिन के दिल अल्लाह की याद से क़रार पाते हैं — अला बि-ज़िक्रिल्-लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब — ख़ूब सुनो, अल्लाह की याद से ही दिलों को क़रार मिलता है।**'

बेटा, लफ़्ज़ '**तत्मइन्न**' लीजिए। ये 'इत्मिनान' से आता है — ठहर जाना, सुकून में आ जाना, काँपना बंद कर देना। ये उस परिंदे के लिए इस्तेमाल होता है जो चक्कर लगाने के बाद आख़िर-कार उतर जाता है, और उस ज़मीन के लिए जो हमवार और मज़बूत हो।

तो आयत कह रही है: **दिल एक बे-क़रार चीज़ है, और ये चक्कर लगाता रहता है जब तक अल्लाह की याद पर उतर न आए।**

बेटा, और सोचिए कि एक मौजूदा ज़िंदगी का कितना हिस्सा दिल को ठहराने की कोशिश में गुज़रता है। हम तफ़रीह आज़माते हैं, खाना, ख़रीदारी, स्क्रॉलिंग, महफ़िल, कामयाबी, मंसूबे — **और उन में से हर एक बे-क़रारी को एक घंटे के लिए दबाता है और फिर वो लौट आती है, कभी पहले से बुरी।**

और आयत '**अला**' से शुरू होती है — **ख़ूब सुनो**, तवज्जोह का लफ़्ज़ जिसका मतलब है: ग़ौर से सुनो, इस में कोई शक नहीं। **दिल एक चीज़ से ठहरते हैं।**

बेटा, और ग़ौर कीजिए कि ज़िक्र हर हालत में मौजूद है। तुम्हें न कोई जगह चाहिए, न

वक़्त, न वुज़ू, न ख़ामोशी, न पैसा, न साथी। एक हॉस्पिटल के कॉरिडोर में, ट्रैफ़िक में, एक बे-नींद रात के बीच में — '**सुब्हानल्लाह, अल्-हम्दु लिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह, अल्लाहु अक्बर।' दवा हमेशा तुम्हारी जेब में है।**

'**अल्लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति तूबा लहुम व हुस्नु म-आब** — जो ईमान लाए और नेक अमल किए — उन के लिए **तूबा** है, और अच्छा ठिकाना।'

बेटा, 'तूबा' की तशरीह भलाई, बरकत, ख़ुशी, राहत के तौर पर की गई — और रिवायत में ये जन्नत के एक दरख़्त का नाम भी है जो इतना वसी' है कि एक सवार उसके साए में सौ साल चलता रहे और उसे पार न कर सके।

वो मिटाते और क़ायम करते हैं

फिर सूरह उन लोगों को मुख़ातिब करती है जिन्होंने मो'जिज़े माँगे, बेटा, और एक हैरत-अंगेज़ बयान से जवाब देती है:

'**व लौ अन्न क़ुरआनन सुय्यिरत बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्ति'अत बिहिल्-अर्ज़ु औ कुल्लिम बिहिल्-मौता — और अगर कोई क़ुरआन ऐसा होता जिस से पहाड़ चलाए जाते, या ज़मीन फाड़ी जाती, या मुर्दों से बात की जाती** — (तो ये वही होता) — **बल लिल्लाहिल्-अम्रु जमी'आ** — मगर तमाम मामला अल्लाह ही का है।'

और फिर: '**अ फ़-लम यअ्-असिल्-लज़ीन आमनू अल्-लौ यशा-उल्लाहु ल-हदन्-नास जमी'आ — क्या जो ईमान लाए उन्होंने ये तस्लीम नहीं किया कि अगर अल्लाह चाहते तो तमाम लोगों को हिदायत दे देते?**'

बेटा, ये हर उस शख़्स के लिए राहत है जो दूसरों को हिदायत देने की कोशिश से थक चुका है। **अगर अल्लाह चाहते कि हर इंसान हिदायत-याफ़्ता हो, तो ये फ़ौरन हो जाता। उन्होंने इसे एक इंतेख़ाब का मामला बनाना चुना।**

'**व लक़दिस्-तुह्ज़िइ-अ बि-रुसुलिम्-मिन क़ब्लिक फ़-अम्लैतु लिल्लज़ीन कफ़रू सुम्म अख़ज़्तुहुम** — और तुम से पहले रसूलों का यक़ीनन मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैंने काफ़िरों को **मोहलत दी**, फिर मैंने उन्हें **पकड़ लिया** — **फ़-कैफ़ काना 'इक़ाब — तो मेरी सज़ा कैसी थी?**'

बेटा, 'अम्लैतु' ग़ौर कीजिए — मैंने उन्हें ढील दी, उन्हें चलने दिया। **वो देर कभी रज़ामंदी न थी।**

'**अ फ़-मन हुव क़ा-इमुन 'अला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा कसबत** — तो क्या वो, जो **हर जान पर निगेहबान** है, जानता है जो उसने कमाया, (किसी और जैसा है)?'

और फिर, बेटा, तक़दीर के बारे में क़ुरआन की सब से उम्मीद देने वाली आयतों में से एक:

'**यम्हुल्-लाहु मा यशा-उ व युस्बित — अल्लाह जो चाहे मिटाते हैं और जो चाहे क़ायम रखते हैं — व 'इन्दहू उम्मुल्-किताब — और उन्ही के पास उम्मुल-किताब (अस्ल किताब) है।**'

बेटा, 'यम्हु' — वो **मिटा** देते हैं, मिटाते हैं। 'युस्बित' — वो जमाते, क़ायम करते, साबित करते हैं।

उलमा ने इसे दुआ और नेक अमल के सिलसिले में समझाया: **चीज़ें लिखी जा सकती हैं और फिर मिटाई जा सकती हैं।** एक मुश्किल जो तुम्हारी तरफ़ बढ़ रही थी मिटाई जा सकती है। एक दुआ बदल सकती है जो होने वाला था। चुपके से दिया गया सदक़ा एक आफ़त दूर कर सकता है। और 'उम्मुल-किताब', अस्ल किताब — अल्लाह के पास का बुनियादी रिकॉर्ड — कभी नहीं बदलता।

बेटा, और इसी लिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि दुआ के सिवा कुछ तक़दीर को नहीं लौटाता, और कि नेकी उम्र बढ़ाती है।

तो ये कभी नतीजा मत निकालिए कि चूँकि कुछ मुक़द्दर है, माँगने का कोई फ़ायदा नहीं। **तुम्हारा माँगना ख़ुद इस इंतेज़ाम का हिस्सा है — और ये आयत तुम्हें बताती है कि चीज़ें मिटाई जाती हैं।**

गवाह के तौर पर काफ़ी

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, नबी ﷺ को एक ऐसी सूरत-ए-हाल में तसल्ली देते हुए जहाँ पूरी दुनिया उन के ख़िलाफ़ लगती थी।

'**अ व लम यरौ अन्ना नअ्तिल्-अर्ज़ नन्क़ुसुहा मिन अत्राफ़िहा — क्या वो नहीं देखते कि हम ज़मीन पर आते हैं, उसे उसके किनारों से कम करते हुए? वल्लाहु यह्कुमु ला मु'अक़्क़िब लि-हुक्मिह — और अल्लाह फ़ैसला करते हैं; उनके फ़ैसले को कोई बदलने वाला नहीं — व हुव सरी'उल्-हिसाब** — और वो जल्दी हिसाब लेने वाले हैं।'

'**व क़द मकरल्-लज़ीन मिन क़ब्लिहिम फ़-लिल्लाहिल्-मक्रु जमी'आ — और उन से पहले वालों ने भी साज़िशें कीं, मगर तमाम तदबीर अल्लाह ही की है — यअ्लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्स** — वो जानता है जो हर जान कमाती है।'

बेटा, 'फ़-लिल्लाहिल्-मक्रु जमी'आ' — **हर मंसूबा, उन समेत जो तुम्हारे ख़िलाफ़ बनाए जा रहे हैं, आख़िर-कार उसके मंसूबे के अंदर है।** लोग तदबीर करते हैं; वो इंतेज़ाम करते हैं। और उनके इंतेज़ाम में उनकी तदबीर भी शामिल है।

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा — और ये हर इल्ज़ाम का जवाब है:

'**व यक़ूलुल्-लज़ीन कफ़रू लस्त मुर्सला — और जो कुफ़्र करते हैं वो कहते हैं: तू भेजा हुआ नहीं — क़ुल कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम व मन 'इन्दहू 'इल्मुल्-किताब — कहो: मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह के तौर पर काफ़ी है, और वो जिसके पास किताब का इल्म है।**'

बेटा, '**कफ़ा बिल्लाहि शहीदा**' — **गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है।**

ये जुमला सीख लीजिए। जब आप पर किसी ऐसी चीज़ का इल्ज़ाम लगे जो आपने की नहीं, जब आपकी नियतों को तोड़ा-मरोड़ा जाए, जब आप अपनी सफ़ाई दे चुके हों और किसी ने क़ुबूल न की हो — **एक मुक़ाम आता है जहाँ एक मोमिन अपना दिफ़ा' करना बंद करता है और यही कहता है।**

बेटा, ये हार मान-ना नहीं। **ये एक मुंतक़िली (ट्रांसफ़र) है। आप मुक़दमा एक ऐसे गवाह के सुपुर्द कर रहे हैं जिसने सब कुछ देखा और जिसे धोका नहीं दिया जा सकता।**

और यूँ ये सूरह, बेटा, जो एक ऐसे आसमान की तरफ़ इशारा करते हुए शुरू हुई जो

बिना सुतून के थमा हुआ है, **आपको ये बताते हुए ख़त्म होती है कि आपको कौन थामे हुए है।**

दरमियान में इसने आपको बुनियादी बातें दीं: एक ही पानी वाले दो टुकड़ों से मुख़्तलिफ़ फल उगते हैं, तो अपनी मिट्टी देखो; कुछ नहीं बदलता जब तक अंदर का न बदले; गरज ख़ुद उसकी तस्बीह कर रही है जब कि लोग बहस करते हैं; ऊँची आवाज़ वाला झाग सूख जाता है और ख़ामोश पानी उतर जाता है; दिल सिर्फ़ उसकी याद से ठहरते हैं; और जो लिखा जा चुका वो अभी भी मिटाया जा सकता है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. वही मिट्टी, वही बारिश, मुख़्तलिफ़ फल — नसीहत को इल्ज़ाम देने से पहले उस ज़मीन को देखो जो उसे क़ुबूल कर रही है।

2. अल्लाह किसी क़ौम की हालत तब बदलते हैं जब वो अपने अंदर की चीज़ बदलें — अपने नारे या निज़ाम नहीं।

3. नेमतें शायद ही अचानक ग़ायब होती हैं; पहले कहीं ख़ामोशी से कुछ सड़ जाता है।

4. गरज तस्बीह कर रही है जब कि इंसान उसके वुजूद पर बहस करते हैं — जब सुनो तो वो दुआ कहो।

5. बातिल झाग है: ऊँची आवाज़, नज़र आने वाला, ऊपर — और सैलाब गुज़रते ही किनारे पर सूखा हुआ। सिर्फ़ ये पूछो: क्या ये लोगों को फ़ायदा देता है?

6. दिल बे-क़रार परिंदे हैं; वो सिर्फ़ एक टहनी पर उतरते हैं — 'अला बि-ज़िक्रिल्-लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब'।

7. वो मिटाते हैं और क़ायम करते हैं — तो माँगना कभी बंद मत करो; और जब कोई तुम्हारी बात न माने, कहो 'कफ़ा बिल्लाहि शहीदा'।

या अल्लाह, हमारे दिलों को अपनी याद से क़रार दीजिए, हमारे अंदर जो है उसे बदल दीजिए, और हमारे गवाह बन जाइए। आमीन।